

दैनिक समसामयिकी विश्लेषण

समय: 45 मिनट

दिनांक: 09-02-2026

विषय सूची

- भारतीय प्रधानमंत्री की मलेशिया यात्रा
- भारत की खगोल विज्ञान अवसंरचना का सुदृढीकरण
- भारत में मानसिक स्वास्थ्य संकट
- भारत-कनाडा सुरक्षा सहयोग
- भारत की कृषि-वनीकरण महत्वाकांक्षाएँ एवं वित्तपोषण तथा नीतिगत बाधाएँ
- भारत में आयुष(AYUSH) क्षेत्र
- संक्षिप्त समाचार
 - थ्वाइट्स हिमनद
 - एरीट्रिया
 - सार्डिनिया द्वीप
 - प्रधानमंत्री राहत एवं रक्षा कोष पर प्रश्न नहीं: PMO
 - परिचय
 - भारत-अमेरिका व्यापार समझौते का GPUs पर प्रभाव
 - एथिलीन ग्लाइकोल
 - स्पेस सिचुएशनल अवेयरनेस
 - रेटिक्युलेटेड अजगर
 - सूरजकुंड मेला

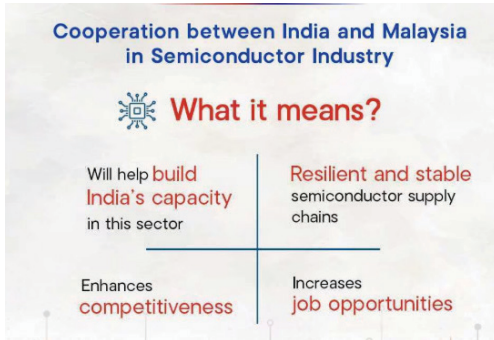
भारतीय प्रधानमंत्री की मलेशिया यात्रा

संदर्भ

- भारत और मलेशिया ने व्यापार एवं निवेश, रक्षा, ऊर्जा, उन्नत विनिर्माण तथा सेमीकंडक्टर जैसे उच्च-प्राथमिकता वाले क्षेत्रों में अपने संबंधों का विस्तार करने का संकल्प लिया।

मुख्य परिणाम

- दोनों पक्षों ने सहयोग बढ़ाने हेतु कुल 11 समझौतों और दस्तावेजों पर हस्ताक्षर किए।



- ऑडियो-विज़ुअल सह-निर्माण समझौता** सांस्कृतिक और मीडिया सहयोग को बढ़ावा देने के लिए तथा **आपदा प्रबंधन सहयोग पर समझौता ज्ञापन (MoU)** आपात स्थितियों के लिए संयुक्त तैयारी को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से।
- प्रौद्योगिकी और औद्योगिक क्षेत्र में**, सरकारों ने सेमीकंडक्टर सहयोग पर **एक्सचेंज ऑफ नोट्स** का आदान-प्रदान किया, जिससे इस महत्वपूर्ण क्षेत्र में क्षमताओं और आपूर्ति श्रृंखलाओं को सुदृढ़ करने की साझा रुचि पर बल दिया गया।
- अंतर्राष्ट्रीय बिग कैट्स एलायंस (IBCA)** पर एक रूपरेखा समझौता भी अंतिम रूप दिया गया, जो जैव विविधता और सतत विकास के प्रति साझा प्रतिबद्धता को दर्शाता है।
- सामाजिक कल्याण**: भारत के **कर्मचारी राज्य बीमा निगम** और मलेशिया के **सामाजिक सुरक्षा संगठन** के बीच एक MoU पर हस्ताक्षर किए गए, जिससे मलेशिया में कार्यरत भारतीय नागरिकों के लिए सामाजिक सुरक्षा कार्यक्रमों को सुदृढ़ किया जा सके।
- व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण तथा सुरक्षा सहयोग** पर भी समझौते किए गए, जो दोनों देशों की राष्ट्रीय सुरक्षा परिषदों के बीच व्यापक संस्थागत संबंधों का संकेत देते हैं।
- दोनों पक्षों ने **10वें मलेशिया-भारत CEO फोरम** की रिपोर्ट भी प्राप्त की, जिसमें व्यापार, निवेश और भविष्य के सहयोग पर निजी क्षेत्र के दृष्टिकोण को रेखांकित किया गया।

भारत-मलेशिया संबंधों का अवलोकन

- राजनयिक संबंध**: दोनों देशों ने 1957 में राजनयिक संबंध स्थापित किए, जिन्हें 2024 में **व्यापक रणनीतिक साझेदारी (CSP)** तक उन्नत किया गया।

- दोनों देश संयुक्त राष्ट्र, आसियान (ASEAN) और गुटनिरपेक्ष आंदोलन जैसे विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के सदस्य हैं।
- व्यापार और आर्थिक संबंध**: मलेशिया भारत का 13वाँ सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार है, जबकि भारत वैश्विक स्तर पर मलेशिया के 10 सबसे बड़े व्यापारिक साझेदारों में शामिल है।
- आसियान क्षेत्र में मलेशिया भारत का तीसरा सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार है, वहीं दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों में भारत मलेशिया का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार है।
- दोनों देशों ने **भारत-मलेशिया व्यापक आर्थिक सहयोग समझौता (CECA)** जैसे विभिन्न आर्थिक समझौतों में भाग लिया है।
- दोनों देशों ने भारतीय रुपये में व्यापार निपटान करने पर सहमति व्यक्त की है, जिससे व्यापारिक संबंधों को सुदृढ़ करने का प्रयोजन स्पष्ट होता है।
- रक्षा और सुरक्षा**: रक्षा संबंध निरंतर विस्तारित हुए हैं, जिनमें 1993 में रक्षा सहयोग ज्ञापन पर हस्ताक्षर, नियमित रक्षा सहयोग बैठकें और संयुक्त सैन्य अभ्यास शामिल हैं।
- रणनीतिक साझेदारी**: उच्च-स्तरीय यात्राओं, संयुक्त आयोगों और संवादों के माध्यम से भारत एवं मलेशिया ने अपनी रणनीतिक साझेदारी को सुदृढ़ करने का लक्ष्य रखा है।
- दोनों देशों ने रक्षा, आतंकवाद-निरोध, समुद्री सुरक्षा और सांस्कृतिक आदान-प्रदान जैसे क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने की रुचि व्यक्त की है।
- आसियान केंद्रीयता**: मलेशिया भारत की **एक्ट ईस्ट नीति** के अनुरूप आसियान के साथ व्यापार विस्तार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
- मलक्का जलडमरूमध्य और दक्षिण चीन सागर में समुद्री संपर्क को आगे बढ़ाने तथा आसियान के **इंडो-पैसिफिक परिप्रेक्ष्य (AOIP)** और **इंडो-पैसिफिक पहल (IPOI)** को समर्थन देने में भी मलेशिया अहम है।
- पर्यटन और प्रवासी समुदाय**: भारत मलेशिया में आने वाले पर्यटकों का पाँचवाँ सबसे बड़ा स्रोत देश है।
- 2009 में रोजगार और श्रमिक कल्याण पर द्विपक्षीय समझौता तथा 2017 में संशोधित वायु सेवा समझौता ने पर्यटन को उल्लेखनीय रूप से बढ़ावा दिया है।
- मलेशिया में विश्व का तीसरा सबसे बड़ा भारतीय प्रवासी समुदाय (2.9 मिलियन) है।
- भारतीय मूल के व्यक्तियों की संख्या लगभग 2.75 मिलियन है, जो मलेशिया की जनसंख्या का लगभग 6.8% है।
- सांस्कृतिक संबंध**: मलेशिया की संस्कृति में भारतीय प्रभाव भाषा, धर्म (हिंदू धर्म एवं बौद्ध धर्म), वास्तुकला, भोजन और त्योहारों में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

चुनौतियाँ

- **व्यापार विवाद और असंतुलन:** शुल्क, गैर-शुल्क बाधाएँ और व्यापार प्रतिबंधों से कभी-कभी आर्थिक संबंधों में तनाव उत्पन्न हुआ है।
- **भूराजनीतिक विचार:** दोनों देशों की विदेश नीति प्राथमिकताएँ और अन्य देशों के साथ संलग्नता अलग-अलग हैं, जिससे रणनीतिक दृष्टिकोण में भिन्नता आती है।
- **इंडो-पैसिफिक एवं चीन कारक:** चीन पर मलेशिया की आर्थिक निर्भरता भारत के साथ गहन रणनीतिक सामंजस्यशील को सीमित करती है।
- **ASEAN के भीतर विभिन्न दृष्टिकोण:** दक्षिण चीन सागर मुद्दों पर ASEAN के अंदर भिन्न दृष्टिकोण भी संबंधों को प्रभावित करते हैं।
- **संपर्क बाधाएँ:** भौगोलिक निकटता के बावजूद समुद्री और लॉजिस्टिक संपर्क का अपर्याप्त उपयोग।
- **रक्षा एवं रणनीतिक सीमाएँ:** रक्षा सहयोग अपेक्षित स्तर से कम है, जो मुख्यतः प्रशिक्षण और अभ्यास तक सीमित है।
 - संयुक्त रक्षा उत्पादन या प्रौद्योगिकी हस्तांतरण का अभाव।
- **प्रवासी समुदाय संबंधी मुद्दे:** भारतीय मूल के समुदाय की कल्याण, रोजगार स्थितियों और राजनीतिक प्रतिनिधित्व से संबंधित चिंताएँ।

निष्कर्ष

- भारत और मलेशिया ने 2022 में आधुनिक राजनयिक संबंधों के 65 वर्ष पूरे किए।
- भारत-मलेशिया संबंध रणनीतिक साझेदारी से उन्नत रणनीतिक साझेदारी और अब व्यापक साझेदारी तक विकसित हुए हैं। सांस्कृतिक कूटनीति, डिजिटल अर्थव्यवस्था और कृषि उत्पादों में नए सहयोग के साथ, दोनों देशों के संबंध भविष्य में एवं अधिक सुदृढ़ होने की संभावना रखते हैं।

Source: TH

भारत की खगोल विज्ञान अवसंरचना का सुदृढ़ीकरण

संदर्भ

- केंद्रीय बजट 2026-27 में अंतरिक्ष विभाग को ₹13,416.20 करोड़ आवंटित किए गए हैं, जो गहन-अंतरिक्ष अन्वेषण और खगोल भौतिकी की दिशा में नए प्रोत्साहन का संकेत है।

बजट में प्रमुख घोषणाएँ

- **उन्नत दूरबीन अवसंरचना का विकास:** सरकार ने 30-मीटर नेशनल लार्ज ऑप्टिकल-इन्फ्रारेड टेलीस्कोप (NLOT) के निर्माण को प्राथमिकता दी है।

- लद्दाख में पैंगोंग झील के निकट नेशनल लार्ज सोलर टेलीस्कोप (NLST) को वित्तीय समर्थन प्राप्त हुआ है।
- हानले स्थित हिमालयन चंद्रा टेलीस्कोप के उन्नयन का प्रस्ताव किया गया है।
- अमरावती में COSMOS-2 तारामंडल पूर्णता के निकट है, जिससे विज्ञान जनसंपर्क को बढ़ावा मिलेगा।
- **गहन-अंतरिक्ष अन्वेषण और खगोल भौतिकी पर ध्यान:** आवंटन का बड़ा हिस्सा अग्रणी अनुसंधान की ओर निर्देशित है, जिससे भारत वैश्विक खोजों में अग्रणी भागीदारी कर सके, न कि केवल द्वितीयक सहयोगी बने।

भारत की वर्तमान खगोल विज्ञान अवसंरचना

- पुणे के निकट जायंट मीटरवेव रेडियो टेलीस्कोप (GMRT) विश्व का सबसे बड़ा निम्न-आवृत्ति रेडियो टेलीस्कोप समूह है।
- 2020 में IN-SPACe (भारतीय राष्ट्रीय अंतरिक्ष संवर्धन एवं प्राधिकरण केंद्र) की स्थापना ने सार्वजनिक-निजी भागीदारी को प्रोत्साहित किया है।
- **एस्ट्रोसैट मिशन,** भारत का प्रथम समर्पित बहु-तरंगदैर्घ्य अंतरिक्ष वेधशाला, ने अंतरिक्ष-आधारित खगोल विज्ञान में भारत की क्षमता को सुदृढ़ किया और वैश्विक स्तर पर मान्यता प्राप्त वैज्ञानिक परिणाम दिए।
- अहमदाबाद स्थित भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला (PRL) ग्रह विज्ञान, सौर भौतिकी एवं अंतरिक्ष खगोल विज्ञान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, और चंद्रयान तथा मंगलयान जैसी मिशनों में योगदान देता है।
- भारत कृत्रिम बुद्धिमत्ता-आधारित डेटा प्रसंस्करण केंद्रों में बढ़ती क्षमताओं का धनी है। इस पारिस्थितिकी तंत्र में ISRO के साथ सहयोग करने वाले स्पेस-टेक स्टार्टअप्स की संख्या में वृद्धि हुई है।

घरेलू अवसंरचना को सुदृढ़ करने का औचित्य

- **सीमित वैश्विक पहुँच:** केवल कुछ देश जैसे अमेरिका, चीन, जापान और यूरोपीय संघ के सदस्य बड़े स्थलीय एवं अंतरिक्ष दूरबीनों में भारी निवेश करते हैं।
- इन सुविधाओं तक पहुँच अत्यधिक प्रतिस्पर्धी है और भारतीय वैज्ञानिकों को विदेशी सुविधाओं पर प्रेक्षण समय प्रायः सीमित मिलता है।
- **भौगोलिक लाभ का उपयोग:** कई प्रस्तावित सुविधाएँ हानले और लद्दाख के पैंगोंग झील के निकट क्षेत्रों में स्थित हैं, जहाँ अंधकारमय, उच्च-ऊँचाई वाले आकाश स्थलीय खगोल विज्ञान के लिए आदर्श हैं।

- **प्रतिभा पलायन रोकना:** विश्व-स्तरीय घरेलू सुविधाएँ प्रतिभाशाली छात्रों और शोधकर्ताओं को भारत में उन्नत अनुसंधान करने के लिए प्रोत्साहित कर सकती हैं।
- **वैश्विक विज्ञान में रणनीतिक स्थिति:** खगोल विज्ञान और अंतरिक्ष विज्ञान योगदान देते हैं:
 - प्रौद्योगिकी प्रसार में।
 - उन्नत उपकरण विकास में।
 - राष्ट्रीय प्रतिष्ठा और सॉफ्ट पावर में।

भारत की खगोल विज्ञान अवसंरचना में अंतराल

- **तुलनीय ऑप्टिकल टेलीस्कोप सुविधाओं का अभाव:** GMRT की सफलता के बावजूद भारत के पास वैश्विक मानकों के अनुरूप विश्व-स्तरीय ऑप्टिकल टेलीस्कोप नहीं है।
- **सब-मिलीमीटर टेलीस्कोप क्षमताओं का अभाव:** भारत के पास वर्तमान में सब-मिलीमीटर तरंगदैर्घ्य पर कार्य करने वाले टेलीस्कोप नहीं हैं, जो आवश्यक हैं:
 - प्रोटो-स्टेलर डिस्क का अध्ययन करने के लिए।
 - आकाशगंगा निर्माण को समझने के लिए।
 - धूलयुक्त तारों के निर्माण क्षेत्रों की जाँच के लिए।
- **बजटीय आवंटनों का अपर्याप्त उपयोग:** विशेषज्ञों ने इंगित किया है कि वास्तविक व्यय बजटीय आवंटनों से कम रहा है।

आगे की राह

- **सार्वजनिक-निजी भागीदारी को बढ़ावा दें:** IN-SPACe के अंतर्गत नियामकीय निगरानी के साथ निजी क्षेत्र की भागीदारी को अंतरिक्ष और खगोल विज्ञान उपकरणों में विस्तारित किया जाना चाहिए।
- **उन्नत डेटा अवसंरचना का निर्माण करें:** कृत्रिम बुद्धिमत्ता-आधारित डेटा विश्लेषण, उच्च-प्रदर्शन कंप्यूटिंग और बिग-डेटा खगोल विज्ञान प्लेटफॉर्म में निवेश को बढ़ाया जाना चाहिए।
- **मानव संसाधन को सुदृढ़ करें:** खगोल भौतिकी और ग्रह विज्ञान में फैलोशिप, पोस्टडॉक्टरल कार्यक्रमों एवं अनुसंधान अनुदानों के लिए अधिक वित्तीय समर्थन प्रदान किया जाना चाहिए।

Source: [TH](#)

भारत में मानसिक स्वास्थ्य संकट

संदर्भ

- आर्थिक सर्वेक्षण 2025-26 ने डिजिटल अभ्यस्तता और स्क्रीन-संबंधी मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं, विशेषकर बच्चों और किशोरों में, चिंताजनक वृद्धि को रेखांकित किया।

परिचय

- बजट में मानसिक स्वास्थ्य अवसंरचना को सुदृढ़ करने के उपायों की घोषणा की गई।
- मुख्य बिंदुओं में उत्तर भारत में दूसरे राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य एवं स्नायु विज्ञान संस्थान (NIMHANS) की स्थापना का प्रस्ताव तथा रांची और तेज़पुर स्थित प्रमुख संस्थानों के उन्नयन का उल्लेख है, जिससे क्षेत्रीय पहुँच में सुधार हो सके।

भारत पर मानसिक स्वास्थ्य का भार

- भारत विश्व के आत्महत्या, अवसाद और अभ्यस्तता के मामलों का लगभग एक-तिहाई हिस्सा है।
 - आत्महत्या 15-29 वर्ष आयु वर्ग के भारतीयों में मृत्यु के प्रमुख कारणों में से एक है।
- विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के अनुसार, 2012 से 2030 के बीच भारत में मानसिक स्वास्थ्य स्थितियों के कारण आर्थिक हानि का अनुमान \$1.03 ट्रिलियन है।
- लगभग 70% से 92% मानसिक रोगियों को जागरूकता की कमी, कलंक और पेशेवरों की कमी के कारण उचित उपचार नहीं मिलता।
- भारत में प्रति 1,00,000 जनसंख्या पर केवल 0.75 मनोचिकित्सक हैं, जबकि WHO कम से कम तीन की अनुशंसा करता है।
- यद्यपि 2014-15 से स्वास्थ्य व्यय में वृद्धि हुई है, मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं के लिए विशेष आवंटन ऐतिहासिक रूप से बहुत कम रहे हैं, कुल स्वास्थ्य बजट का लगभग 1%।

भारत में मनोरोग स्वास्थ्य देखभाल की चुनौतियाँ

- **मनोचिकित्सालयों की खराब स्थिति:** प्रायः क्रूरता, उपेक्षा, दुर्व्यवहार और निम्नस्तरीय जीवन स्थितियों से जुड़ी होती है।
 - यह प्रणालीगत उपेक्षा और अपर्याप्त जवाबदेही तंत्र को दर्शाता है।
- **अल्प वित्तपोषण:** मानसिक स्वास्थ्य को कुल स्वास्थ्य बजट का लगभग 1% ही मिलता है, जिसमें अधिकांश संस्थागत देखभाल पर व्यय होता है, न कि सामुदायिक देखभाल पर।
- **प्रशिक्षित कर्मियों की कमी:** भारत का मानसिक स्वास्थ्य कार्यबल अत्यंत सीमित है; प्रति 1,00,000 जनसंख्या पर केवल 0.75 मनोचिकित्सक और 0.12 मनोवैज्ञानिक उपलब्ध हैं।
 - WHO के मानकों के अनुसार कम से कम तीन मनोचिकित्सक होने चाहिए।
- **असमान वितरण:** कुछ ही मनोचिकित्सक जिला मुख्यालयों पर हैं, कस्बों/गाँवों में लगभग नहीं।
 - इससे शहरी-ग्रामीण मानसिक स्वास्थ्य देखभाल में विभाजन उत्पन्न होता है।

- सुलभता एवं आर्थिक बाधाएँ: ग्रामीण/आंतरिक क्षेत्रों में दवाएँ उपलब्ध नहीं।
- उपचार हेतु यात्रा से मजदूरी की हानि होती है, जो गरीब परिवारों के लिए असहनीय है।
- गंभीर मानसिक रोगी प्रायः आय अर्जित नहीं करते, जिससे आर्थिक भार और बढ़ता है।

भारत सरकार की प्रमुख पहलें

- **मानसिक स्वास्थ्य देखभाल अधिनियम, 2017:**
 - आत्महत्या के प्रयासों को अपराध की श्रेणी से बाहर किया।
 - WHO दिशानिर्देशों को मानसिक रोगों की श्रेणीकरण में शामिल किया।
 - अग्रिम निर्देश प्रावधान के अंतर्गत मानसिक रोगी अपने उपचार का मार्ग स्वयं तय कर सकते हैं।
 - इलेक्ट्रो-कन्वल्सिव थेरेपी (ECT) पर प्रतिबंध, विशेषकर नाबालिगों पर।
 - भारतीय समाज में कलंक से निपटने के उपायों को शामिल किया।
- **विकलांग व्यक्तियों के अधिकार अधिनियम, 2017:**
 - मानसिक रोग को विकलांगता के रूप में मान्यता दी और विकलांगों के अधिकारों एवं सुविधाओं को बढ़ाने का प्रयास किया।
- **सुकदेव साहा बनाम आंध्र प्रदेश राज्य:**
 - भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने मानसिक स्वास्थ्य को अनुच्छेद 21 के अंतर्गत मौलिक अधिकार के रूप में सुदृढ़ किया, जिससे सरकार कानूनी रूप से सुलभ, सस्ती और गुणवत्तापूर्ण मानसिक स्वास्थ्य देखभाल सुनिश्चित करने के लिए बाध्य हुई।
- **आयुष्मान भारत:** मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं को व्यापक प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल पैकेज में शामिल किया गया।
- **जिला मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम (DMHP):** 767 जिलों में लागू, आत्महत्या रोकथाम, तनाव प्रबंधन और परामर्श जैसी सेवाएँ प्रदान करता है।
- **राष्ट्रीय टेली मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम (NTMHP):** 2022 में शुरू, 36 राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों में 53 टेली मानस सेल के माध्यम से मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं की पहुँच प्रदान करता है।
- **मानसिक स्वास्थ्य क्षमता का विस्तार:** मेडिकल कॉलेजों और अस्पतालों में मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं एवं शैक्षिक संसाधनों को सुदृढ़ करना।
- **बजट आवंटन:** विगत पाँच वर्षों में भारत का मानसिक स्वास्थ्य आवंटन ₹683 करोड़ (2020-21) से बढ़कर लगभग ₹1,898 करोड़ (2024-25) हुआ है।

आवश्यक सुधारात्मक उपाय

- मानसिक स्वास्थ्य व्यय को कुल स्वास्थ्य व्यय का 5% तक बढ़ाना (WHO मानक)।
- ग्रामीण पहुँच को सुदृढ़ करने हेतु मध्य-स्तरीय मानसिक स्वास्थ्य प्रदाताओं को प्रशिक्षित और नियुक्त करना।
- मानसिक स्वास्थ्य को प्राथमिक देखभाल और सार्वभौमिक बीमा योजनाओं में पूर्ण रूप से एकीकृत करना।
- जिला-स्तरीय जवाबदेही के साथ निगरानी और मूल्यांकन प्रणाली स्थापित करना।
- विशेषकर विद्यालयों एवं कार्यस्थलों में कलंक-निवारण और जागरूकता अभियान का विस्तार करना।
- एकीकृत मानसिक स्वास्थ्य रणनीति सुनिश्चित करने हेतु मंत्रालयों के बीच बेहतर समन्वय।

निष्कर्ष

- भारत का मानसिक स्वास्थ्य पारिस्थितिकी तंत्र वित्तपोषण, कार्यबल और शासन में त्रिगुणीय कमी का सामना कर रहा है।
- इन अंतरालों को समाप्त करने के लिए नीतिगत एकीकरण, विकेन्द्रीकृत सेवा वितरण और सामाजिक कलंक-निवारण आवश्यक है, जिससे वैश्विक सर्वोत्तम प्रथाओं एवं WHO दिशानिर्देशों के अनुरूप प्रगति हो सके।

Source: TH

भारत-कनाडा सुरक्षा सहयोग

संदर्भ

- भारत के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल ने ओटावा में कनाडाई अधिकारियों के साथ उच्च-स्तरीय वार्ता की, जिसका उद्देश्य सुरक्षा सहयोग को सुदृढ़ करना, सूचना साझाकरण को सुव्यवस्थित करना और लगभग दो वर्षों की राजनयिक तनातनी के बाद संस्थागत संबंधों को पुनर्स्थापित करना था।

पृष्ठभूमि

- 2023 में कनाडा ने खालिस्तान उग्रवाद से जुड़े एक कनाडाई नागरिक की हत्या में भारतीय अधिकारियों की संलिप्तता का आरोप लगाया।
- भारत ने इन आरोपों को निराधार और राजनीतिक रूप से प्रेरित बताते हुए खारिज कर दिया, जिसके परिणामस्वरूप राजनयिक निष्कासन, व्यापार वार्ताओं का निलंबन एवं द्विपक्षीय संबंधों में गिरावट आई।
- वर्तमान संवाद कार्यात्मक सहयोग को पुनर्स्थापित करने का एक संतुलित प्रयास है, विशेषकर सुरक्षा और कानून प्रवर्तन क्षेत्रों में।

संवाद के प्रमुख परिणाम

- **राष्ट्रीय सुरक्षा पर कार्य योजना:** दोनों देशों ने राष्ट्रीय सुरक्षा और कानून प्रवर्तन पर सहयोग को मार्गदर्शित करने हेतु एक संरचित कार्य योजना पर सहमति व्यक्त की।
- **लायज़न अधिकारियों की नियुक्ति:** भारत और कनाडा एक-दूसरे के देशों में सुरक्षा एवं कानून प्रवर्तन लायज़न अधिकारियों को नियुक्त करेंगे, जिससे द्विपक्षीय संचार सुव्यवस्थित हो तथा वास्तविक समय में सूचना साझाकरण संभव हो सके।
- **प्रमुख क्षेत्र:**
 - अवैध मादक पदार्थों की तस्करी, विशेषकर फेंटानिल प्रीकर्सर्स।
 - अंतर्राष्ट्रीय संगठित अपराध नेटवर्क।
 - उग्रवादी वित्तपोषण और दस्तावेज धोखाधड़ी।
- **उग्रवाद और प्रवासी मुद्दों का समाधान:** चर्चाओं में उग्रवादी धनसंग्रह, दबाव डालना और संगठित अपराध नेटवर्क से जुड़े प्रचार पर विचार किया गया।
- **साइबर सुरक्षा सहयोग:** दोनों पक्षों ने साइबर सुरक्षा नीति पर सहयोग को औपचारिक रूप देने पर सहमति व्यक्त की। साइबर खतरों पर सूचना साझाकरण के लिए संस्थागत तंत्र भी स्थापित किए जाएंगे।

भारत-कनाडा संबंधों का संक्षिप्त विवरण

- **ऐतिहासिक संबंध:** भारत और कनाडा ने 1947 में राजनयिक संबंध स्थापित किए।
 - साझा लोकतांत्रिक मूल्य एवं राष्ट्रमंडल सदस्यता ने संबंधों को आधार प्रदान किया।
 - 1974 और 1998 में भारत के परमाणु परीक्षणों के बाद कनाडा की अप्रसार नीति के कारण संबंधों में तनाव रहा।
- **आर्थिक सहयोग:** 2024 (जनवरी-अगस्त) में वस्तुओं का कुल द्विपक्षीय व्यापार USD 8.55 बिलियन रहा (भारत का निर्यात: USD 5.22 बिलियन और आयात: USD 3.33 बिलियन)।
 - व्यापक आर्थिक भागीदारी समझौता (CEPA) और विदेशी निवेश संवर्धन और संरक्षण समझौता (FIPA) पर वार्ताएँ जारी हैं।
- **नागरिक परमाणु सहयोग:**
 - 2010 में परमाणु सहयोग समझौता (NCA) पर हस्ताक्षर हुए, जो 2013 से लागू है।
 - एक संयुक्त समिति 2010 के समझौते के कार्यान्वयन की देखरेख करती है।
- **अंतरिक्ष सहयोग:** 1996 और 2003 में ISRO और कनाडाई अंतरिक्ष एजेंसी (CSA) के बीच MoUs पर हस्ताक्षर हुए।
 - सहयोग में उपग्रह ट्रैकिंग, अंतरिक्ष खगोल विज्ञान और वाणिज्यिक उपग्रह प्रक्षेपण शामिल हैं।

- ISRO की वाणिज्यिक इकाई ANTRIX ने कई कनाडाई नैनो-उपग्रहों का प्रक्षेपण किया है।
- **विज्ञान और प्रौद्योगिकी:** पृथ्वी विज्ञान विभाग और पोलर कनाडा ने शीत जलवायु (आर्कटिक) अध्ययन पर ज्ञान एवं वैज्ञानिक अनुसंधान के आदान-प्रदान हेतु कार्यक्रम शुरू किया।
 - 2020 में नेशनल सेंटर फॉर पोलर एंड ओशन रिसर्च (NCPOR) और पोलर कनाडा के बीच सहयोग ज्ञापन पर हस्ताक्षर हुए।
- **जन-से-जन संबंध:** कनाडा में लगभग 1.8 मिलियन इंडो-कनाडाई और एक मिलियन प्रवासी भारतीय हैं, जो उसकी जनसंख्या का 3% से अधिक हिस्सा हैं।
 - कनाडा में अंतर्राष्ट्रीय छात्रों का सबसे बड़ा स्रोत भारत है, जिसमें भारतीय लगभग 40% हैं।
 - सशक्त सांस्कृतिक आदान-प्रदान और जीवंत प्रवासी समुदाय द्विपक्षीय धारणाओं को प्रभावित करता है।
- **बहुपक्षीय सहयोग:** दोनों देश G20, राष्ट्रमंडल, संयुक्त राष्ट्र और अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन जैसे मंचों पर सहयोग करते हैं।

आगे की राह

- भारत-कनाडा संबंधों का आधार सुदृढ़ है और व्यापार, शिक्षा तथा स्वच्छ ऊर्जा में अपार संभावनाएँ हैं।
- हालाँकि, द्विपक्षीय संबंध नाजुक बने हुए हैं, जहाँ राजनीतिक और सुरक्षा संबंधी चिंताएँ प्रमुख बाधक हैं।
- भविष्य इस बात पर निर्भर करेगा कि दोनों देश इन मतभेदों का प्रबंधन कैसे करते हैं और साझा हितों का लाभ कैसे उठाते हैं।

Source: [TH](#)

भारत की कृषि-वनीकरण महत्वाकांक्षाएँ एवं वित्तपोषण तथा नीतिगत बाधाएँ

संदर्भ

- हाल ही में विशेषज्ञों ने प्रथम दक्षिण एशियाई कृषि-वनीकरण एवं वन क्षेत्र से बाहर वृक्ष (AF-TOF) कांग्रेस के दौरान यह रेखांकित किया कि भारत का कृषि-वनीकरण वित्तीय पहुँच, नीतिगत क्रियान्वयन और किसानों की जागरूकता के मामले में गंभीर चुनौतियों का सामना कर रहा है।

दक्षिण एशियाई कृषि-वनीकरण एवं वन क्षेत्र से बाहर वृक्ष (AF-TOF) कांग्रेस

- इसे ट्रीस्केप्स 2026 कांग्रेस कहा गया।
- यह दक्षिण एशिया में कृषि-वनीकरण और वन क्षेत्र से बाहर वृक्षों (TOF) को आगे बढ़ाने हेतु समर्पित पहला क्षेत्रीय मंच था।
- इसका आयोजन अंतर्राष्ट्रीय वानिकी अनुसंधान और विश्व कृषि वानिकी केंद्र (CIFOR-ICRAF) ने भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) के सहयोग से किया।

कृषि-वनीकरण के बारे में

- यह एक भूमि-उपयोग प्रणाली है जिसमें एक ही भूमि पर वृक्षों को फसलों और/या पशुधन के साथ एकीकृत किया जाता है।
- यह खाद्य सुरक्षा, मृदा स्वास्थ्य, जैव विविधता, कार्बन अवशोषण और किसानों के लिए आय विविधीकरण को बढ़ाता है।
- यह भूमि क्षरण और जलवायु जोखिमों से निपटने में सहायक है।

वर्तमान स्थिति एवं भविष्य की परिकल्पना

- वर्तमान में भारत में लगभग 2.8 करोड़ हेक्टेयर भूमि कृषि-वनीकरण के अंतर्गत है, और सरकार का लक्ष्य 2050 तक इसे 5 करोड़ हेक्टेयर तक विस्तारित करना है।
- वृक्ष-आधारित प्रणालियाँ भारत के राष्ट्रीय कार्बन भंडार का लगभग 20% हिस्सा हैं।

संबंधित मुद्दे एवं चिंताएँ

- **वित्तीय पहुँच की कमी:** लगभग ₹20 लाख करोड़ वार्षिक संस्थागत कृषि ऋण में से 5% से भी कम कृषि-वनीकरण तक पहुँचता है।
 - ♦ **कारण:**
 - लंबी परिपक्वता अवधि (5-30 वर्ष)।
 - भूमि अधिकार और स्वामित्व की जटिलताएँ।
 - स्वीकार्य संपार्श्विक का अभाव।
- **नीतिगत जागरूकता की कमी:** किसानों में राष्ट्रीय कृषि-वनीकरण नीति, 2014 के प्रति कम जागरूकता, विशेषकर:
 - ♦ वृक्ष कटाई अधिकार।
 - ♦ पारगमन और नियामक स्वीकृतियाँ।
- **कमजोर नीतिगत क्रियान्वयन:** यद्यपि कृषि-वनीकरण को जलवायु और आजीविका के अनुकूल माना जाता है, फिर भी संस्थागत एवं वित्तीय समर्थन की कमी के कारण इसका विस्तार और प्रभाव सीमित है।
- **आर्थिक अवसरों का अभाव:** भारत प्रतिवर्ष \$7 बिलियन से अधिक मूल्य की लकड़ी आयात करता है, जो घरेलू संसाधनों के अपर्याप्त उपयोग और किसानों व हरित अर्थव्यवस्था के लिए खोए हुए अवसर को दर्शाता है।

भारत में कृषि-वनीकरण हेतु प्रयास

- **राष्ट्रीय कृषि-वनीकरण नीति, 2014:** वृक्ष-आधारित खेती को बढ़ावा देने हेतु विश्व की प्रथम नीति।
- **ICAR-नेतृत्व वाले अनुसंधान और क्षेत्रीय अध्ययन:** प्रमाण बताते हैं कि कृषि-वनीकरण वनों की कटाई को कम करने और प्रतिवर्ष करोड़ों टन ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन से बचने में सहायक है।

- **AF-TOF/Treesaples कांग्रेस:** नीति-निर्माताओं, शोधकर्ताओं, वित्तीय संस्थानों, उद्योग, किसानों और युवाओं को शामिल करने वाला क्षेत्रीय मंच, जो शासन एवं निवेश ढाँचे को सुदृढ़ करता है।

आगे की राह

- लंबी परिपक्वता वाले वृक्ष प्रणालियों के लिए अनुकूलित वित्तीय उत्पादों के माध्यम से संस्थागत ऋण प्रवाह में सुधार।
- वृक्ष कटाई और पारगमन पर विनियमों को सरल बनाना, स्पष्ट एवं किसान-हितैषी दिशा-निर्देशों के साथ।
- बुनियादी स्तर पर कृषि-वनीकरण नीतियों की जागरूकता बढ़ाना।
- **कार्बन बाज़ार और डिजिटल उपकरणों का उपयोग:** कार्बन क्रेडिट, डिजिटल ट्रेसबिलिटी और निजी क्षेत्र की खरीद को छोटे किसानों की वास्तविकताओं के अनुरूप बनाना।
- **आयात निर्भरता कम करना:** घरेलू लकड़ी और वृक्ष-आधारित मूल्य श्रृंखलाओं को बढ़ावा देना, जिससे ग्रामीण आय सुदृढ़ हो, विशेषकर भारत के 86% सीमांत किसानों के लिए।
- जलवायु, कृषि और व्यापार नीतियों को संरेखित करना, ताकि कृषि-वनीकरण की आय सृजन, जलवायु शमन और पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं की क्षमता को खोला जा सके।

Source: DTE

भारत में आयुष (AYUSH) क्षेत्र

समाचार में

- हाल ही में वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने 2026-27 के केंद्रीय बजट में आयुष क्षेत्र के लिए कई संसाधनों का प्रस्ताव किया।
 - ♦ भारत का नया मुक्त व्यापार समझौता (FTA) यूरोपीय संघ के साथ भारतीय चिकित्सकों और उत्पादों के लिए यूरोपीय बाज़ार में प्रवेश को अधिक सुगम बनाता है।

भारत में आयुष क्षेत्र

- आयुष में पारंपरिक चिकित्सा प्रणालियाँ जैसे आयुर्वेद, योग, यूनानी, सिद्ध और होम्योपैथी शामिल हैं।
 - ♦ इसमें क्लीनिक, वेलनेस केंद्र, अनुसंधान, हर्बल उत्पाद, शिक्षा और समग्र स्वास्थ्य अभ्यास सम्मिलित हैं।
- भारत का आयुष क्षेत्र तीव्र गति से विस्तार कर रहा है, जिसे प्राकृतिक उपचारों की बढ़ती मांग, जागरूकता और पारंपरिक चिकित्सा प्रणालियों को बढ़ावा देने वाली सरकारी पहलों का समर्थन प्राप्त है।
- हाल के वर्षों में इसमें उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, और यह राजस्व एवं रोजगार के दृष्टिकोण से एक प्रमुख क्षेत्र के रूप में उभरा है।

संस्थागत ढाँचा और प्रमुख पहलें

- **राष्ट्रीय आयुष मिशन (NAM):** सार्वजनिक स्वास्थ्य देखभाल में आयुष को एकीकृत करने हेतु प्रमुख नीतिगत साधन।
 - ♦ प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र (PHCs), सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र (CHCs) और जिला अस्पतालों में आयुष सुविधाओं का सह-स्थान।
 - ♦ आयुष अवसंरचना और मानव संसाधनों को सुदृढ़ करना।
- **राष्ट्रीय महत्व के संस्थान:** अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान (नई दिल्ली), राष्ट्रीय होम्योपैथी संस्थान (कोलकाता) तथा सिद्ध, यूनानी, योग और प्राकृतिक चिकित्सा के लिए समर्पित राष्ट्रीय संस्थान।
- **नियामक एवं अनुसंधान निकाय:** केंद्रीय आयुर्वेदिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (CCRAS), राष्ट्रीय भारतीय चिकित्सा प्रणाली आयोग और राष्ट्रीय होम्योपैथी आयोग।
- **औषधीय पौधों का संवर्धन:** राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड (NMPB) 32 राज्य बोर्डों के साथ मिलकर गुणवत्तापूर्ण खेती, मूल्य श्रृंखला और निर्यात को समर्थन देता है।
- **प्रमुख योजनाएँ:** AYURGYAN (शिक्षा और क्षमता निर्माण), आयुर्वास्थ्य योजना (समुदाय स्वास्थ्य और आयुष प्रणालियों द्वारा निवारक देखभाल)।
- 2026-27 के बजट में आयुष क्षेत्र का कुल आवंटन ₹4,408 करोड़ तक पहुँच गया, जो 2025-26 में ₹3,992 करोड़ और 2020-21 में ₹2,122 करोड़ था।
- तीन नए अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थानों की स्थापना की घोषणा की गई, जिन्हें पारंपरिक चिकित्सा के स्वर्ण मानक के रूप में विकसित किया जाएगा, जैसे AIIMS वैज्ञानिक चिकित्सा के लिए है।
- बजट में जामनगर स्थित WHO वैश्विक पारंपरिक चिकित्सा केंद्र को उन्नत करने हेतु धनराशि का प्रावधान किया गया, ताकि भारत पारंपरिक चिकित्सा के वैश्विक मानक निर्धारण और दस्तावेजीकरण में अग्रणी भूमिका निभा सके।
- राष्ट्रीय आयुष मिशन का बजट 66% बढ़ाकर ₹1,300 करोड़ किया गया है, ताकि स्थानीय आयुष अस्पतालों एवं औषधालयों का आधुनिकीकरण हो, आधुनिक अस्पतालों में आयुष क्लीनिक स्थापित किए जा सकें और वर्तमान केंद्रों को निवारक स्वास्थ्य पर केंद्रित किया जा सके।
- बजट में आयुष फार्मेशियों और औषधि परीक्षण प्रयोगशालाओं को उन्नत करने हेतु भी धनराशि प्रदान की गई है।
- सरकार Bharat-VISTAAR नामक बहुभाषी एआई सहायक भी प्रस्तुत कर रही है, जो औषधीय पौधे उगाने वाले किसानों को बेहतर गुणवत्ता वाली जड़ी-बूटियाँ उगाने, वर्तमान बाजार मूल्य जानने एवं निर्यात हेतु फसल प्रमाणन पर वास्तविक समय में परामर्श देगा।

भारत-यूरोपीय संघ मुक्त व्यापार समझौते की भूमिका

- भारत-यूरोपीय संघ FTA आयुष क्षेत्र को रणनीतिक लाभ प्रदान करता है:
 - ♦ भारतीय आयुष चिकित्सकों के लिए डिग्री-मान्यता बाधाओं के बिना आसान गतिशीलता।
 - ♦ सभी 27 यूरोपीय संघ देशों में भारतीय वेलनेस और आयुर्वेद व्यवसायों के लिए कानूनी निश्चितता।
 - ♦ प्रयोगशाला परीक्षण और सुरक्षा प्रमाणपत्रों की पारस्परिक मान्यता।
 - ♦ भारत की पारंपरिक एवं डिजिटल लाइब्रेरी (TKDL) को जैव-चोरी से संरक्षण।

आयुष का महत्व

- निवारक, व्यक्तिगत और समग्र स्वास्थ्य देखभाल को बढ़ावा देता है, जो आधुनिक चिकित्सा का पूरक है।
- भारत की सॉफ्ट पावर और सांस्कृतिक कूटनीति का विस्तार करता है।
- वेलनेस पर्यटन और हर्बल औषधि निर्यात को बढ़ावा देता है।
- औषधीय पौधे उगाने वाले किसानों के लिए आजीविका उत्पन्न करता है।
- वैश्विक स्वास्थ्य शासन में भारत की भूमिका को सुदृढ़ करता है।

चुनौतियाँ

- कुछ क्षेत्रों में सीमित अवसंरचना और प्रशिक्षित जनशक्ति।
- उपचार प्रोटोकॉल और मानकीकरण का अभाव।
- हर्बल औषधियों में गुणवत्ता नियंत्रण और सुरक्षा संबंधी चिंताएँ।
- अप्रमाणित उपचारों और मिक्सोपैथी जैसी प्रथाओं पर आलोचना।
- वैश्विक विश्वास अर्जित करने हेतु सशक्त नैदानिक परीक्षण और साक्ष्य-आधारित प्रमाणीकरण की आवश्यकता।

निष्कर्ष एवं आगे की राह

- आयुष क्षेत्र भारत की स्वास्थ्य देखभाल और सांस्कृतिक विरासत का प्रमुख हिस्सा है, जो सस्ती एवं निवारक समाधान प्रदान करता है।
- वैश्विक मांग में वृद्धि के साथ यह वेलनेस मॉडल और आर्थिक प्रेरक शक्ति के रूप में कार्य कर सकता है, किंतु परंपरा तथा आधुनिक विज्ञान के संतुलन हेतु एकीकरण, वैज्ञानिक प्रमाणीकरण एवं नियामक चुनौतियों का समाधान सशक्त नीति, अनुसंधान और नवाचार के माध्यम से करना आवश्यक है।

Source : [TH](#)

संक्षिप्त समाचार

थ्वाइट्स हिमनद

संदर्भ

- वैज्ञानिकों ने थ्वाइट्स हिमनद (जिसे “डूमसडे हिमनद” कहा जाता है) के बारे में चिंता व्यक्त की है, क्योंकि यह मानव गतिविधियों से प्रेरित जलवायु परिवर्तन के कारण अभूतपूर्व दर से पिघल रहा है।

थ्वाइट्स हिमनद (डूमसडे हिमनद)

- यह पश्चिम अंटार्कटिक हिमपत्र (WAIS) का एक आउटफ्लो हिमनद है, जो अमंडसन सागर में प्रवाहित होता है।
 - पश्चिम अंटार्कटिक हिमपत्र पृथ्वी के 16 जलवायु टिपिंग एलिमेंट्स में से एक है।
- इसे ‘डूमसडे हिमनद’ इसलिए कहा जाता है क्योंकि इसके पिघलने से समुद्र-स्तर में भारी वृद्धि हो सकती है।
 - यह उन सबसे महत्वपूर्ण स्थानों में से एक है, जहाँ से भविष्य में समुद्र-स्तर वृद्धि को समझने का प्रयास किया जाता है।
- यदि थ्वाइट्स लंबे समय में पूरी तरह ध्वस्त हो जाए, तो वैश्विक समुद्र-स्तर लगभग आधा मीटर तक बढ़ सकता है।
 - समुद्र-स्तर में वृद्धि से तटीय क्षेत्रों में बाढ़, क्षरण, तूफानी लहरें और शहरों, निम्न-स्तरीय द्वीपों तथा बंदरगाहों को खतरा होगा।
 - यद्यपि थ्वाइट्स अधिकांश जनसंख्या वाले क्षेत्रों से दूर है, इसके परिवर्तन का प्रभाव विश्वभर के लोगों पर पड़ेगा।

Source : [TH](#)

एरीट्रिया

समाचार में

- हाल ही में इथियोपिया ने एरीट्रिया से अपनी सेना को इथियोपियाई क्षेत्र से तुरंत हटाने की माँग की, जिससे हॉर्न ऑफ अफ्रीका में नए तनाव उजागर हुए।

परिचय

- राजधानी:** अस्मारा (यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल घोषित)।
- अवस्थिति:** हॉर्न ऑफ अफ्रीका (उत्तर-पूर्वी अफ्रीका) में स्थित। यह अफ्रीका को पश्चिम एशिया से जोड़ने वाले एक महत्वपूर्ण भू-रणनीतिक गलियारे पर स्थित है।
- रणनीतिक महत्व:** यह बाब-एल-मंदेब जलडमरूमध्य के पश्चिमी तट को नियंत्रित करता है, जो लाल सागर को अदन की खाड़ी से जोड़ने वाला एक महत्वपूर्ण वैश्विक समुद्री मार्ग है।

- भौगोलिक विशेषताएँ:** लाल सागर तट पर गर्म रेगिस्तानी जलवायु; मध्य उच्चभूमि में समशीतोष्ण/भूमध्यसागरीय जैसी जलवायु।
- अंतर्राष्ट्रीय समूहों में सदस्यता:** अफ्रीकी संघ (AU) और COMESA (पूर्वी और दक्षिणी अफ्रीका के लिए साझा बाजार)।



Source : [TH](#)

सार्डिनिया द्वीप

समाचार में

- इटली सरकार लगभग 750 कैदियों को सख्त “41bis” एंटी-माफिया व्यवस्था के अंतर्गत सार्डिनिया की कुछ सुविधाओं में केंद्रित करने की योजना बना रही है।

इटली की 41bis व्यवस्था

- इसका नाम उस कानून पर आधारित है जो इसे नियंत्रित करता है, और यह यूरोप की सबसे कठोर व्यवस्थाओं में से एक है।
- 1992 में एंटी-माफिया न्यायाधीश जियोवानी फाल्कोन की हत्या के बाद लागू किया गया।
- यह कैदियों पर लगभग पूर्ण अलगाव लागू करता है और इसे जेल के अंदर से माफिया सरगनाओं द्वारा संचालन रोकने के लिए बनाया गया था।

सार्डिनिया

- यह इटली में स्थित है और पश्चिमी भूमध्यसागर में, कोर्सिका के निकट तथा अफ्रीका के उत्तर में स्थित है।
- इसमें ग्रेनाइट और शिस्ट की पर्वतीय स्थलाकृति है, जिसमें माउंट ला मारमोरा इसकी सर्वोच्च चोटी है, तथा यहाँ उप-उष्णकटिबंधीय भूमध्यसागरीय जलवायु पाई जाती है।
- इसकी अर्थव्यवस्था कृषि पर आधारित है, विशेषकर भेड़ और बकरी पालन पर। यह द्वीप अपनी सांस्कृतिक परंपराओं, वार्षिक उत्सवों और विशिष्ट कोड ऑफ ऑनर के लिए प्रसिद्ध है।
- सार्डिनिया के दूरस्थ शहर नुओरो में एक उच्च-सुरक्षा जेल ऐतिहासिक रूप से शीर्ष माफिया सरगनाओं और आतंकवादियों को रखती रही है।

Source : [IE](#)

प्रधानमंत्री राहत एवं रक्षा कोष पर प्रश्न नहीं: PMO

संदर्भ

- प्रधानमंत्री कार्यालय (PMO) ने लोकसभा सचिवालय को सूचित किया है कि PM केयर फण्ड, प्रधानमंत्री राष्ट्रीय राहत कोष (PMNRF) और राष्ट्रीय रक्षा कोष (NDF) से संबंधित संसदीय प्रश्न एवं चर्चाएँ लोकसभा की कार्यवाही तथा व्यवसाय संचालन नियमों के अंतर्गत स्वीकार्य नहीं हैं।

परिचय

- लोकसभा में प्रश्न पूछने का अधिकार नियम 41(2)(viii) में कहा गया है कि “यह ऐसे विषय से संबंधित नहीं होना चाहिए जो मुख्यतः भारत सरकार का विषय न हो।”
 - नियम 41(2)(xvii) में कहा गया है कि “यह ऐसे विषयों को नहीं उठाएगा जो मुख्यतः भारत सरकार के प्रति उत्तरदायी निकायों या व्यक्तियों के नियंत्रण में न हों।”
- पीएमओ द्वारा दिया गया तर्क यह था कि इन कोषों की निधि पूरी तरह स्वैच्छिक जन योगदान से बनी है और भारत की संचित निधि से कोई आवंटन नहीं किया गया है।

कोष

- **PM CARES:** यह एक सार्वजनिक धर्मार्थ न्यास है, जिसे कोविड जैसी राष्ट्रीय आपात स्थितियों के लिए निधि जुटाने हेतु 2020 में स्थापित किया गया। इसका ट्रस्ट डीड पंजीकरण अधिनियम, 1908 के अंतर्गत पंजीकृत है।
- **PMNRF:** प्राकृतिक आपदाओं, बड़े हादसों, दंगों आदि से प्रभावित लोगों को त्वरित राहत प्रदान करता है।
- **NDF:** सशस्त्र और अर्धसैनिक बलों के सदस्यों तथा उनके परिवारों के कल्याण हेतु विशेष रूप से बनाया गया है।

Source : [IE](#)

भारत-अमेरिका व्यापार समझौते का GPUs पर प्रभाव

समाचार में

- भारत और अमेरिका ने एक अंतरिम व्यापार समझौते के अंतर्गत प्रौद्योगिकी व्यापार को उल्लेखनीय रूप से बढ़ाने पर सहमति व्यक्त की है, विशेषकर ग्राफिक्स प्रोसेसिंग इकाइयाँ (GPUs) और डेटा सेंटर उपकरणों में, साथ ही संयुक्त तकनीकी सहयोग का विस्तार करने पर।

ग्राफिक्स प्रोसेसिंग यूनिट (GPU)

- यह एक विशेष प्रोसेसर है, जिसे ग्राफिक्स से संबंधित कार्यों जैसे छवि और वीडियो रेंडरिंग को तेज करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।

- न्यूरल प्रोसेसिंग यूनिट्स (NPUs) की तरह, GPUs समानांतर प्रसंस्करण में उत्कृष्ट हैं, जिससे वे एक साथ कई कार्य संभाल सकते हैं और प्रति सेकंड खरबों संचालन कर सकते हैं।
- आज GPUs बड़े न्यूरल नेटवर्क को प्रशिक्षित करने के लिए अपरिहार्य हैं।

अनुप्रयोग

- मूल रूप से GPUs का उपयोग गेमिंग, वीडियो संपादन और 3D ग्राफिक्स रेंडरिंग के लिए किया जाता था।
- उनकी विशाल प्रसंस्करण क्षमता के कारण अब वे जटिल कार्यों जैसे बड़े पैमाने पर डेटा प्रसंस्करण और क्रिप्टोकॉर्सी माइनिंग के लिए आवश्यक हो गए हैं।
- GPUs कृत्रिम बुद्धिमत्ता, वैज्ञानिक अनुसंधान, बड़े पैमाने पर डेटा विश्लेषण और क्रिप्टोकॉर्सी माइनिंग सहित व्यापक अनुप्रयोगों का समर्थन करते हैं।

वर्तमान स्थिति

- भारत की GPU क्षमता 2026 के अंत तक 38,000 से बढ़कर लगभग 1,00,000 तक पहुँचने वाली है, जिसे इंडियाएआई मिशन का समर्थन प्राप्त है, जो स्टार्टअप्स और शोधकर्ताओं के लिए GPU उपयोग को सब्सिडी देता है।
- सरकार अपने AI कार्यभार हेतु NIC's मेघराज जैसी अवसंरचना के माध्यम से संप्रभु कंप्यूट क्षमता भी बना रही है।
- यह विस्तार भारत के AI पारिस्थितिकी तंत्र को सुदृढ़ करने, छोटे उद्यमों के लिए कंप्यूटिंग लागत कम करने और देश को AI विकास एवं डेटा सेंटर का वैश्विक केंद्र बनाने का लक्ष्य रखता है।
- आगामी भारत-एआई प्रभाव शिखर सम्मेलन सामाजिक समस्याओं के लिए AI समाधान प्रदर्शित करेगा और वैश्विक दक्षिण में भारत की भूमिका को उजागर करेगा।

हालिया समझौते का महत्व

- नया समझौता भारत को अत्याधुनिक GPUs आयात करने की अनुमति देता है, जिससे बढ़ती AI कंप्यूट आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके।
- डेटा सेंटरों में भारत ने विदेशी कंपनियों के लिए 2047 तक कर अवकाश की पेशकश की है, जो अमेरिका की प्रमुख माँग थी। इससे गूगल, माइक्रोसॉफ्ट और अमेज़न जैसी कंपनियों से बड़े निवेश आकर्षित होंगे, जो क्षेत्र में \$200 बिलियन तक निवेश को प्रोत्साहित कर सकते हैं।
- यह समझौता इलेक्ट्रॉनिक्स व्यापार का विस्तार, प्रौद्योगिकी प्रवाह में सुधार और आपूर्ति श्रृंखलाओं को सुदृढ़ करने का वादा करता है, जिससे भारत इलेक्ट्रॉनिक्स निर्माण, AI एवं नवाचार का वैश्विक केंद्र बनेगा। द्विपक्षीय व्यापार \$100 बिलियन तक पहुँचने की संभावना है।

Source : [IE](#)

एथिलीन ग्लाइकोल

समाचार में

- तमिलनाडु सरकार ने आल्मंड किट खाँसी सिरप के एक बैच पर प्रतिबंध लगा दिया है, क्योंकि इसमें एथिलीन ग्लाइकोल संदूषण पाया गया।

एथिलीन ग्लाइकोल के बारे में

- एथिलीन ग्लाइकोल (EG) एक रंगहीन, गंधहीन, मीठे स्वाद वाला, जल में घुलनशील कार्बनिक यौगिक है।
- इसका उपयोग वाहनों में एंटीफ्रीज, हाइड्रोलिक तरल पदार्थों, स्याही, विलायकों और पॉलिएस्टर उत्पादन में किया जाता है।
- यह अत्यधिक विषैला है। ऑटोमोटिव एंटीफ्रीज (95% EG) विषाक्तता का सामान्य स्रोत है, जो थोड़ी मात्रा में भी घातक परिणाम दे सकता है।

Source : [TH](#)

स्पेस सिचुएशनल अवेयरनेस

समाचार में

- भारतीय निजी एयरोस्पेस कंपनी अजिस्ता स्पेस ने अपने कक्षा में स्थित उपग्रह से अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (ISS) की इमेजिंग करके एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है, जिससे भारत की स्पेस सिचुएशनल अवेयरनेस (SSA) क्षमता सुदृढ़ हुई है।

परिचय

- SSA में उपग्रहों, अंतरिक्ष मलबे और पृथ्वी के निकट स्थित पिंडों (जैसे क्षुद्रग्रहों) की व्यापक निगरानी, ट्रैकिंग और पूर्वानुमान शामिल है, ताकि अंतरिक्ष सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके।
- यह टकराव जोखिमों का विश्लेषण करता है और बचाव उपायों में सहयोग करता है, विशेषकर तब जब 50 से अधिक भारतीय उपग्रह (₹50,000 करोड़ मूल्य) कक्षा में वर्तमान हों।
- अजिस्ता का यह प्रदर्शन राष्ट्रीय SSA को परिसंपत्ति संरक्षण, नौसैनिक निगरानी और कक्षीय खतरों से रक्षा हेतु सुदृढ़ करता है।

Source : [TH](#)

रेटिक्युलेटेड अजगर

संदर्भ

- गिनीज़ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स ने इंडोनेशिया के सुलावेसी से 7.22 मीटर लंबी मादा रेटिक्युलेटेड अजगर इबू बैरन या “द बैरोनेस” को विश्व की सबसे लंबी मापी गई साँप प्रजाति के रूप में मान्यता दी है।

रेटिक्युलेटेड अजगर के बारे में

- वैज्ञानिक नाम: *मलयोपाइथन रेटिकुलैटस*

- प्राकृतिक आवास:** दक्षिण और दक्षिण-पूर्व एशिया, जिसमें इंडोनेशिया, फिलीपींस, मलेशिया, थाईलैंड एवं भारत के कुछ हिस्से शामिल हैं।
- भौतिक विशेषताएँ:**
 - यह विश्व की सबसे लंबी साँप प्रजाति है।
 - यह तीन सबसे भारी साँप प्रजातियों में से एक है (ग्रीन एनाकोंडा और बर्मी अजगर के बाद)।
 - इसकी त्वचा पर विशिष्ट जाल जैसी (रेटिक्युलेटेड) आकृतियाँ होती हैं।
- मानव पर शिकार:** रेटिक्युलेटेड अजगर उन कुछ साँप प्रजातियों में से है जो मनुष्यों का शिकार करने के लिए जानी जाती हैं।
 - यह शिकार को कसकर जकड़कर दम घोंट देती है और फिर उसे पूरा निगल जाती है।



Source: DTE

सूरजकुंड मेला

संदर्भ

- फरीदाबाद में सूरजकुंड अंतर्राष्ट्रीय शिल्प मेला में एक दुखद दुर्घटना हुई, जब एक विशाल झूला गिर गया।

सूरजकुंड मेले के बारे में

- 1987 में प्रारंभ होने के बाद से यह मेला भारतीय सांस्कृतिक विरासत, शिल्प और कला की एक सशक्त वैश्विक पहचान बन चुका है।
- इसका आयोजन सूरजकुंड मेला प्राधिकरण और हरियाणा पर्यटन द्वारा किया जाता है, जिसमें केंद्रीय पर्यटन, वस्त्र, संस्कृति और विदेश मंत्रालयों का सहयोग होता है।
- इस वर्ष 50 से अधिक देश भाग ले रहे हैं, जिसमें मिस्र साझेदार राष्ट्र है।
- केंद्रीय विषय “लोकल टू ग्लोबल – आत्मनिर्भर भारत” है, जिसका उद्देश्य पारंपरिक कारीगरों को अंतर्राष्ट्रीय पहचान दिलाना है।
- उत्तर प्रदेश और मेघालय इस वर्ष के थीम राज्य हैं।
- यह आयोजन वसुधैव कुटुम्बकम् (विश्व एक परिवार है) की भावना का प्रतिबिंब है।

Source: [TH](#)